नील नदी घाटी सभ्यता के उदय एवं विकास की ऐतिहासिक क्रमिकता (Historical Chronology of the rise and development of the Nile Valley civilization)

नील नदी घाटी सभ्यता के काल या अवधि के सम्बन्ध में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। इतिहासकार पेरी ने इसे दुनिया की प्राचीनतम सभ्यता माना है, परन्तु अधिकांश विद्वान पेरी के मत से असहमत हैं। लेकिन यह निर्विवाद है कि पश्चिमी देशों में मिस्र की सभ्यता सबसे अधिक प्राचीन है। नवीनतम प्राप्त साक्ष्यों से ऐसा संकेत मिलता है कि जिस काल में भारत और चीन की सभ्यताएँ विकसित हो रही थीं, उसी दौरान मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ भी विकास की राह पर सतत् रूप से आगे बढ़ रही थीं। मिस्र की सभ्यता का उदय एवं विकास नील नदी घाटी में सम्भव हुआ। मिस्रवासी नील नदी को पवित्र मानते थे, क्योंकि यहाँ सभ्यता के उदय एवं विकास के लिए उपयुक्त अनुकूल परिस्थितियाँ थीं, जैसे उपजाऊ मिट्टी का होना, जिसमें कृषक अधिशेष उत्पादन कर सकते थे। इसके अलावा सिंचाई व्यवस्था पर्याप्त थी, जल में शिकार हेतु मछलियाँ मिल जाती थीं तथा अन्य पशु भी पानी पीने के लिए यहाँ आते थे, जो उस समय के मानव के भोजन सामग्री के लिए प्रयुक्त थे। नदियों का उपयोग परिवहन के रूप में किया गया। कालान्तर में जिसने व्यापार के विकास को सम्भव बनाया। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ नये क्षेत्रों को कृषि योग्य बनाया गया और सिंचाई व्यवस्था की जाने लगी। इस व्यवस्था हेतु बाँध, नहरें एवं नालियाँ आदि का निर्माण सम्भव हुआ। इसके लिए समाज में किसी संगठन की आवश्यकता थी। इन्हीं सब प्रक्रिया के फलस्वरूप आगे चलकर एक राज्य सरकार की आधारशिला रखी गयी। मिस्र की सभ्यता काफी प्राचीन थी। लेकिन इसके सन्तोषजनक साक्ष्य अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। साक्ष्यों के आधार पर मिस्र के राजनीतिक इतिहास का ज्ञान 3400 ई. पू. से ही प्राप्त होता है। मिनीज नामक शासक ने 3400 ई. पू. ही मिस्र की राजनीतिक संरचना का निर्माण किया था। इथिपोपी, नूबी व नीलियम जाति के लोगों ने इस सभ्यता की स्थापना की थी। इतिहासकार पिलण्डर्स पेट्री के अनुसार मिस्र की सभ्यता की शुरुआत आज से लगभग 10 से 12 हजार वर्ष पूर्व में ही हो चुकी थी। मिस्र की सभ्यता की ऐतिहासिक क्रमिकता पूर्व-राजवंशीय युग से शुरू होकर साम्राज्यवादी युग तक जाती है। मिस्र सभ्यता के तहत लगभग 3000 हजार वर्षों के दौरान 30 राजवंशों द्वारा शासन किया गया। मिस्र के राजनीतिक इतिहास को प्रमुख रूप से चार चरणों में विभक्त किया जा सकता है—

(1) पूर्व-राजवंशीय काल, (2) पिरामिड काल, (3) सामन्तवादी काल, (4) साम्राज्यवादी काल।

Scanned with OKEN Scanner

1. पूर्व-राजवंशीय काल—लगभग 5000-3400 ई. पू. का प्रागैतिहासिक काल मुख्यतः पूर्व राजवंशीय काल कहलाता है। पाषाणकालीन काल के उत्तरार्द्ध में उत्तरी अफ्रीका की शुष्क जलवायु तेजी से गर्म और शुष्क हो गई जिसने इस क्षेत्र की आबादी को नील नदी घाटी के तट पर बसने पर मजबूर कर दिया। नवपाषाण काल की समाप्ति पर अनेक कृषक बस्तियाँ शनैः-शनैः नगरों में परिवर्तित हो गई। मिस्र की सभ्यता के पूर्व-राजवंशीयकालीन इतिहास के पठन में मिस्र की पाषाणिक संस्कृति की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। प्रागैतिहासिक काल में मिस्र के क्षेत्र से सबसे पहले पुरापाषाण के अवशेष प्राप्त होते हैं जो अफ्रीका और यूरोप की एबेविलियन तथा एशूलियन संस्कृति के समान था। इसके पश्चात् यहाँ मध्य-पुरापाषाण काल की **लवाल्वाई संस्कृति** (Levalloisian Culture) के फलक पर बने उपकरण प्राप्त होते हैं जिसे 'अटारियन' कहा गया। उत्तर-पुरापाषाण काल की ब्लेड संस्कृति को इस क्षेत्र में सेबिलिन नाम दिया गया। इस युग के उपरान्त जलवायु में परिवर्तन के फलस्वरूप संस्कृति में भी परिवर्तन आया। मध्यपाषाणकालीन संस्कृति के पश्चात् यहाँ 6000 ई. पू. नवपाषाण काल की शुरुआत के साथ ही नील घाटी में स्थायी बस्तियों की शुरुआत हुई जिसने कृषि एवं पशुपालन की शुरुआत की। पूर्व-पाषाणकालीन तथा नवपाषाणकालीन संस्कृतियों के अवशेष सन् 1895 ई. में डे. भार्गन द्वारा किये गये अन्वेषण के पश्चात् प्रकाश में आये। उत्खनन के पश्चात् कुल्हाड़ी, तीर एवं भाले प्राप्त हुए हैं। ये उपकरण दिखने में बेडौल एवं भद्दे थे। इन अवशेषों का समय 4000 ई. पू. निर्धारित किया गया। नवपाषाण काल में ये उपकरण सुडौल बनाये गये। अब धीरे-धीरे इन उपकरणों के साथ ताँबा, चाँदी व सोना धातुओं को भी मिलाया जाने लगा। हालांकि यह युग आखेट एवं कृषि के बीच सम्पर्क का समय था। लेकिन लोग खेती करना सीख गये थे। मिस्रवासियों ने जंगलों को साफ कर, दलदलों को सुखाकर, वन्य पशुओं को भगाकर व सिंचाई की व्यवस्था करके कृषि कर्म करना आरम्भ किया। लगभग 5500 ई. पू. तक नील नदी घाटी में रहने वाली छोटी जनजातियाँ संस्कृतियों की एक शृंखला में विकसित हुईं, ये प्रवृत्ति उनके कृषि एवं पशुपालन पर नियन्त्रण स्थापित करने का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। उनके द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन एवं व्यक्तिगत वस्तुएँ यथा-कंगन, कंघी एवं मोतियों से उन्हें समझा जा सकता है। उत्तरी मिस्र को इन प्रारम्भिक संस्कृतियों में सबसे विस्तृत, बदारी को इसकी उच्च गुणवत्ता वाले चीनी मिट्टी की वस्तुओं, पत्थर के उपकरण और ताँबे के उनके प्रयोग हेतु जाना जाता है।

उत्तरी मिस्र में बदारी के उपरान्त अमरेशन एवं गार्जियन संस्कृतियाँ आयीं जिन्होंने बहुत-सी बेहतर तकनीकों को प्रदर्शित किया। दक्षिणी मिस्र में नाकाडा संस्कृति का लगभग 4000 ई. पू. के आस-पास नील नदी के किनारे विस्तार प्रारम्भ हुआ। ध्यातव्य है कि नाकाडा के समय से ही पूर्व-राजवंशीय मिस्र, इथियोपिया से 'ओब्सीडियन' का आयात करता था जिसका उपयोग चिंगारी से ब्लेड एवं अन्य वस्तुओं को आकार देने में किया जाता था। पूर्व राजवंशीय युग के अन्तिम काल के दौरान नाकाडा संस्कृति द्वारा लिखित प्रतीकों का प्रयोग करना शुरू किया जो अन्ततः प्राचीन मिस्र की भाषा लिखने हेतु हिएरोग्लिफ्स की एक सम्पूर्ण प्रणाली में विकसित हो गया।

पूर्व-राजवंश काल के बारे में सबूतों की कमी की वजह से उस युग का सम्पूर्ण विवरण मिलना दुष्कर है। मिस्र के निचले स्थलों से प्राप्त कब्रों से परिवार की इकाइयों पर आधारित एक अनुरूप समाज के बारे में ज्ञात होता है। लेकिन मिस्र के निचले स्थलों से सामाजिक एकरूपता का पता नहीं चलता। उदाहरणस्वरूप मेरिम्दे (लगभग 4300-3800 ई. पू.) का छोटा-सा गाँव ज्यादातर कृषक परिवारों की इकाइयों से निर्मित था वहीं फायुम ए (लगभग 4600-4000 ई. पू.) के नागरिक ज्यादातर शिकारी और संग्राहक थे। मिस्र के निचले स्तर से भिन्न मिस्र के ऊपरी स्तर में बदारियन युग (लगभग 4500-3800 ई. पू.) से ही सामाजिक सोपानिकी का पता मिलता है। बदारियन कब्रें अपने आकार एवं उसमें रखी सम्पत्ति की विविधता द्वारा मृतकों को प्राप्त विभिन्न हैसियतों का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। कब्रें अक्सर समाज के पहलुओं को प्रतिबिंबित करती हैं तथा प्राप्त शवाधान के अनुसार कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में ऊँची हैसियत के मालिक थे और सम्पत्ति एवं संसाधनों तक उनकी पहुँच अधिक थी। राजवंश-पूर्व काल के अन्त तक आते-आते स्थानीय अभिजात्य आर्थिक संसाधनों पर एकाधिपत्य स्थापित करने में सक्षम हो चुके थे। बड़े मकबरों का बनना श्रम एवं वित्तीय दोनों मामलों में विपुल संसाधनों की मौजूदगी का पता देती हैं। अभिजात्य वर्गों के पास दूरस्थ व्यापार के द्वारा माल प्राप्ति तथा योग्य शिल्पियों के मकबरों एवं कब्रों के निर्माण में नियुक्ति की ताकत थी।

Scanned with OKEN Scanner

1. पूर्व-राजवंशीय काल—लगभग 5000-3400 ई. पू. का प्रागैतिहासिक काल मुख्यत: पूर्व राजवंशीय काल कहलाता है। पाषाणकालीन काल के उत्तरार्द्ध में उत्तरी अफ्रीका की शुष्क जलवायु तेजी से गर्म और शुष्क हो गई जिसने इस क्षेत्र की आबादी को नील नदी घाटी के तट पर बसने पर मजबूर कर दिया। नवपाषाण काल की समाप्ति पर अनेक कृषक बस्तियाँ शनैः-शनैः नगरों में परिवर्तित हो गई। मिस्र की सभ्यता के पूर्व-राजवंशीयकालीन इतिहास के पठन में मिस्र की पाषाणिक संस्कृति की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। प्रागैतिहासिक काल में मिस्र के क्षेत्र से सबसे पहले पुरापाषाण के अवशेष प्राप्त होते हैं जो अफ्रीका और यूरोप की एबेविलियन तथा एशूलियन संस्कृति के समान था। इसके पश्चात् यहाँ मध्य-पुरापाषाण काल की **लवाल्वाई संस्कृति** (Levalloisian Culture) के फलक पर बने उपकरण प्राप्त होते हैं जिसे 'अटारियन' कहा गया। उत्तर-पुरापाषाण काल की ब्लेड संस्कृति को इस क्षेत्र में सेबिलिन नाम दिया गया। इस युग के उपरान्त जलवायु में परिवर्तन के फलस्वरूप संस्कृति में भी परिवर्तन आया। मध्यपाषाणकालीन संस्कृति के पश्चात् यहाँ 6000 ई. पू. नवपाषाण काल की शुरुआत के साथ ही नील घाटी में स्थायी बस्तियों की शुरुआत हुई जिसने कृषि एवं पशुपालन की शुरुआत की। पूर्व-पाषाणकालीन तथा नवपाषाणकालीन संस्कृतियों के अवशेष सन् 1895 ई. में डे. भार्गन द्वारा किये गये अन्वेषण के पश्चात् प्रकाश में आये। उत्खनन के पश्चात् कुल्हाड़ी, तीर एवं भाले प्राप्त हुए हैं। ये उपकरण दिखने में बेडौल एवं भद्दे थे। इन अवशेषों का समय 4000 ई. पू. निर्धारित किया गया। नवपाषाण काल में ये उपकरण सुडौल बनाये गये। अब धीरे-धीरे इन उपकरणों के साथ ताँबा, चाँदी व सोना धातुओं को भी मिलाया जाने लगा। हालांकि यह युग आखेट एवं कृषि के बीच सम्पर्क का समय था। लेकिन लोग खेती करना सीख गये थे। मिस्रवासियों ने जंगलों को साफ कर, दलदलों को सुखाकर, वन्य पशुओं को भगाकर व सिंचाई की व्यवस्था करके कृषि-कर्म करना आरम्भ किया। लगभग 5500 ई. पू. तक नील नदी घाटी में रहने वाली छोटी जनजातियाँ संस्कृतियों की एक शृंखला में विकसित हुईं, ये प्रवृत्ति उनके कृषि एवं पशुपालन पर नियन्त्रण स्थापित करने का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। उनके द्वारा बनाये गये मिट्टी के बर्तन एवं व्यक्तिगत वस्तुएँ यथा-कंगन, कंघी एवं मोतियों से उन्हें समझा जा सकता है। उत्तरी मिस्र की इन प्रारम्भिक संस्कृतियों में सबसे विस्तृत, बदारी को इसकी उच्च गुणवत्ता वाले चीनी मिट्टी की वस्तुओं, पत्थर के उपकरण और ताँबे के उनके प्रयोग हेतु जाना जाता है।

उत्तरी मिस्र में बदारी के उपरान्त अमरेशन एवं गार्जियन संस्कृतियाँ आयीं जिन्होंने बहुत-सी बेहतर तकनीकों को प्रदर्शित किया। दक्षिणी मिस्र में नाकाडा संस्कृति का लगभग 4000 ई. पू. के आस-पास नील नदी के किनारे विस्तार प्रारम्भ हुआ। ध्यातव्य है कि नाकाडा के समय से ही पूर्व-राजवंशीय मिस्र, इथियोपिया से 'ओब्सीडियन' का आयात करता था जिसका उपयोग चिंगारी से ब्लेड एवं अन्य वस्तुओं को आकार देने में किया जाता था। पूर्व राजवंशीय युग के अन्तिम काल के दौरान नाकाडा संस्कृति द्वारा लिखित प्रतीकों का प्रयोग करना शुरू किया जो अन्ततः प्राचीन मिस्र की भाषा लिखने हेतु हिएरोग्लिफ्स की एक सम्पूर्ण प्रणाली में विकसित हो गया।

पूर्व-राजवंश काल के बारे में सबूतों की कमी की वजह से उस युग का सम्पूर्ण विवरण मिलना दुष्कर है। मिस्र के निचले स्थलों से प्राप्त कब्रों से परिवार की इकाइयों पर आधारित एक अनुरूप समाज के बारे में ज्ञात होता है। लेकिन मिस्र के निचले स्थलों से सामाजिक एकरूपता का पता नहीं चलता। उदाहरणस्वरूप मेरिमदे (लगभग 4300-3800 ई. पू.) का छोटा-सा गाँव ज्यादातर कृषक परिवारों की इकाइयों से निर्मित था वहीं फायुम ए (लगभग 4600-4000 ई. पू.) के नागरिक ज्यादातर शिकारी और संग्राहक थे। मिस्र के निचले स्तर से भिन्न मिस्र के ऊपरी स्तर में बदारियन युग (लगभग 4500-3800 ई. पू.) से ही सामाजिक सोपानिकी का पता मिलता है। बदारियन कब्रें अपने आकार एवं उसमें रखी सम्पत्ति की विविधता द्वारा मृतकों को प्राप्त विभिन्न हैसियतों का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। कब्रें अक्सर समाज के पहलुओं को प्रतिबिंबित करती हैं तथा प्राप्त शवाधान के अनुसार कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में ऊँची हैसियत के मालिक थे और सम्पत्ति एवं संसाधनों तक उनकी पहुँच अधिक थी। राजवंश-पूर्व काल के अन्त तक आते-आते स्थानीय अभिजात्य आर्थिक संसाधनों पर एकाधिपत्य स्थापित करने में सक्षम हो चुके थे। बड़े मकबरों का बनना श्रम एवं वित्तीय दोनों मामलों में विपुल संसाधनों की मौजूदगी का पता देती हैं। अभिजात्य वर्गों के पास दूरस्थ व्यापार के द्वारा माल प्राप्ति तथा योग्य शिल्पियों के मकबरों एवं कब्रों के निर्माण में नियुक्ति की ताकत थी।

Scanned with OKEN Scanner

पूर्व-राजकाल ने अपने सम्पत्ति के वितरण, सामाजिक अन्तरों और श्रम-विभाजन वाले मिस्त्री राज्य की नींव डाली। सोपानिकी आधारित श्रेणियों के निशान वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। मिस्त्री पूर्व-राजवंशीय नगर-राज्यों का उद्‌भव का समय 3400 ई. पू. माना जाता है। पूर्व-राजवंशीय मिस्र शुरुआत में छोटे-छोटे नगर राज्यों में विभाजित था, जो संयुक्त होकर दो राज्यों में संघटित हो गये थे, यथा-नील नदी के मुहाने का उत्तरी राज्य और नील की घाटी का दक्षिणी राज्य । उत्तरी मिस्र के राज्य की राजधानी बूटों थी और उनका विशेष रंग लाल था। इनकी संरक्षिका नागदेवी थी। इसके राजा लाल मुकुट पहनते थे। उनके राजप्रासाद एवं कोषागार क्रमशः 'पे' तथा 'रक्तभवन' कहलाते थे। उनके राजचिह्न 'पेपाइरस का गुच्छा' तथा 'मधुमक्खी' थे। दक्षिण मिस्र के राज्य की राजधानी 'नेखेब' 'आधुनिक अलकाब' थी और उनका विशेष रंग 'श्वेत' था। इसके राजा लम्बा श्वेत मुकुट धारण करते थे। उनका राजप्रासाद 'नेखेन' एवं कोषागार 'श्वेत भवन' कहलाता था। उनका राजचिह्न लिली पौधे की शाखा थी। इनकी संरक्षिका 'गृध्रदेवी नेखबत' थी ।

उत्तरी तथा दक्षिण के मिस्र के राज्यों को सम्मिलित करके राजनीतिक एकता एवं प्रथम वंश की स्थापना मेना (मेनिज) द्वारा की गई थी, जो दक्षिणी मिस्र में एवाइडोस के नजदीक स्थित तेनी (थिनिस) नामक स्थान का निवासी था। फ्रेंकफर्ट प्रभूति विद्वानों ने मेनिज की ऐतिहासिकता पर सन्देह व्यक्त किया। जबकि ब्रेस्टेड ने मेनिज को एक ऐतिहासिक शासक के रूप में स्वीकार किया। मेनिज से लेकर मिस्र के प्रथम दो वंशों के शासकों ने लगभग 420 वर्षों तक शासन किया था। हालांकि इन नरेशों की उपलब्धियों के विषय में क्रमबद्ध और विस्तृत स्रोत न प्राप्त होने की दशा में इतिहास लेखन एक मुश्किल कार्य है। परन्तु इतना तो कहा जा सकता है कि इन्होंने मिस्र के नव-स्थापित संगठित राज्य को स्थायित्व देने में सहायता की। साथ ही पूर्व-राजवंशीय युग की सांस्कृतिक उपलब्धियों ने पिरामिड युग की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

Scanned with OKEN Scanner